

## डॉ. अल फुहर, एक्लेसिएस्टेस, सत्र 5

© 2024 अल फुहर और टेड हिल्डेब्रांट

एक्लेसिएस्टेस जिन मुद्दों के लिए सबसे अधिक जाना जाता है उनमें से एक है कोहेलेट की मृत्यु के प्रति चिंता। और मृत्यु के मूल भाव की यह अनिवार्यता जिसे हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में पाते हैं, वास्तव में पुस्तक में एक गंभीर तस्वीर पेश करती है।

हम पाते हैं कि यह रूपांकन बार-बार सामने आता है। और जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, ऐसा लगता है जैसे कोहेलेट मृत्यु और मृत्यु की अनिवार्यता में व्यस्त है। और जीवन की गिरती स्थिति की दुविधा का समाधान खोजने के लिए जिस क्षैतिज दृष्टिकोण से वह यह यात्रा कर रहा है, उससे बहुत कम आशा प्रतीत होती है।

और शुरुआत से ही, जब उत्पत्ति अध्याय 3 में मानव जाति का पतन हुआ, हम पाते हैं कि मृत्यु वास्तव में उस पतन की सजा है। और इस प्रकार, यह कुछ ऐसा बन जाता है जो संपूर्ण मानवजाति के अस्तित्व में व्याप्त हो जाता है। दूसरे शब्दों में, हम जानते हैं कि जब से हम पैदा हुए हैं, हम एक मार्ग पर हैं, कब्र की ओर एक प्रक्षेप पथ पर।

और जैसा कि कोहेलेट कब्र की ओर बढ़ते हुए, जीवन के क्षणभंगुर अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति पर ध्यान केंद्रित करता है, वह इस तथ्य से उबर नहीं पाता है कि चाहे कोई बुद्धिमान हो, चाहे कोई धनवान हो, चाहे कोई मूर्ख हो, चाहे कोई भाग्य को लुभाता हो या नहीं, सभी मानव जाति उसी दिशा में जा रही है, सामान्य कब्र। अब पुराने नियम में, मृत्यु और उसके बाद के जीवन का धर्मशास्त्र अस्पष्ट है। ऐसा प्रतीत होता है कि पुराने नियम के संत मृत्यु के बाद मनुष्य के अस्तित्व के बारे में बहुत कम जानते हैं।

लेकिन पूरे पुराने नियम में, आपको यह उल्लेख मिलता है कि मृत्यु एक ऐसी चीज़ है जिससे डरना चाहिए, कुछ ऐसी चीज़ जिसके बारे में निश्चित रूप से आशा नहीं करनी चाहिए। बुद्धि का इरादा किसी के जीवन के वर्षों को बढ़ाने के लिए उसकी मृत्यु के समय को टालने और टालने का प्रयास करना है। और इसलिए, पुराने नियम में, हमें मृत्यु के धर्मशास्त्र और शायद उसके बाद के जीवन के बारे में भी झलक मिलती है।

लेकिन इस प्रकार की चीज़ें तब तक पूरी तरह से प्रकट नहीं होती हैं जब तक हम नए नियम तक नहीं पहुंच जाते, विशेष रूप से कब्र के बाद व्यक्ति के लिए, मानव जाति के लिए युगांतकारी अस्तित्व के संदर्भ में। अब सभोपदेशक की पुस्तक में, आपको कुछ बार कब्र के लिए या पुराने नियम, शीओल में मृत्यु के बाद के क्षेत्र के लिए शब्द मिलते हैं। शीओल शब्द पुराने नियम में लगभग 65 बार पाया जाता है।

एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में, वह स्थान जहां मैं हमेशा शीओल शब्द के पाए जाने के बारे में सोचता हूं, वह एक्लेसिएस्टेस अध्याय 9 में जॉय लाइफ रिफ्रेन्स के 7वें में से 6वें भाग में है। एक्लेसिएस्टेस अध्याय 9 श्लोक 7 में लिखा है, जाओ अपना खाना खुशी से खाओ और पीओ आनन्दित मन से शराब पी, क्योंकि अब यह जान लिया गया है कि जो कुछ तुम करते हो, परमेश्वर

उस पर अनुग्रह करता है। दूसरे शब्दों में, कोहेलेट इस बात से भली-भांति परिचित हैं कि वर्तमान ही जीवन का समय है क्योंकि हम सभी उस स्थान, कब्र की ओर जा रहे हैं, जहां उन चीजों को करने में सक्षम होने की कोई क्षमता नहीं है जो हम वर्तमान में करने में सक्षम हैं। कार्य करने और प्रदर्शन करने में सक्षम होना। सदैव सफेद वस्त्र धारण करें और सदैव अपने सिर पर तेल लगाएं।

इस जीवन के सभी दिन अपनी पत्नी, जिससे आप प्रेम करते हैं, के साथ जीवन का आनंद उठाएँ। मेरा सुझाव है कि इस संदर्भ में क्षणभंगुरता को संभवतः उजागर किया जा रहा है, लेकिन भारीपन के पीछे अर्थ के अन्य परिवार यहां बहुत दूर नहीं लगते हैं। यह सारा भारी जीवन जो परमेश्वर ने तुम्हें सूर्य के नीचे दिया है, अर्थात् तुम्हारे सारे भारी दिन।

क्योंकि जीवन में, और तुम्हारे कठिन परिश्रम में, और सूर्य के नीचे तुम्हारा काम यही है। आपका हाथ जो भी करने को मिले, उसे अपनी पूरी ताकत से करें। शीओल में, एनआईवी इसका अनुवाद करता है, क्योंकि कब्र में, जहां आप जा रहे हैं वहां न तो काम है, न योजना, न ज्ञान और न ही बुद्धि।

ज्ञान का अभ्यास यहां और अभी किया जा सकता है लेकिन मृत्यु के बाद, ऐसे ज्ञान के अभ्यास की कोई क्षमता नहीं है। इसलिए, इस जीवन में लाभ देने के लिए आज के ज्ञान को लागू करना चाहिए। बुद्धि नरक की दुविधा और इसके साथ जुड़ी मृत्यु की अनिवार्यता को हल करने में सक्षम नहीं है।

अब पुराने नियम में, हिब्रू शब्द शेओल का अनुवाद आम तौर पर कब्र के रूप में किया जाता है, लेकिन ऐसा लगता है कि यह जमीन के नीचे केवल छह फीट से भी अधिक कुछ इंगित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शीओल अंधकार के स्थान को संदर्भित करता है, यह एक ऐसा स्थान है जिससे बचना चाहिए। मैं सुझाव दूंगा कि यह आवश्यक रूप से नरक का संदर्भ नहीं दे रहा है क्योंकि केजेवी लगभग 30 बार पुराने नियम में शीओल शब्द का अनुवाद करता है।

मैं सुझाव दूंगा कि यह आवश्यक रूप से सक्रिय दंड और निर्णय का स्थान नहीं है, लेकिन पुराने नियम में ऐसा लगता है कि इससे बचना चाहिए। और निश्चित रूप से, सभोपदेशक की पुस्तक में मृत्यु कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी सराहना की जाए या जश्न मनाया जाए। यह विचार नहीं है कि भगवान के संतों का उनके घर आने पर जश्न मनाया जाएगा जैसा कि हम अक्सर अंतिम संस्कार में सोचना पसंद करते हैं।

मृत्यु एक ऐसी चीज़ है जो इस गिरी हुई दुनिया और इस गिरे हुए अस्तित्व पर भगवान के फैसले का एक हिस्सा है जिसे हम सभी अनुभव करते हैं। यह स्वाभाविक है लेकिन फिर भी यदि संभव हो तो इसे टाल देना चाहिए। इसलिए, ज्ञान अकाल मृत्यु से बचने और किसी के जीवन के वर्षों को बढ़ाने का प्रयास करता है।

लेकिन कोहेलेट के लिए समस्या यह है कि जब एक बुद्धिमान व्यक्ति वह सब कुछ करता है जो ज्ञान करने का सुझाव देता है और उसे समयबद्ध तरीके से करता है, फिर भी उसके पास अंततः अपनी मृत्यु के दिन को नियंत्रित करने की कोई क्षमता नहीं होती है। और यदि वह ऐसा करने में सक्षम भी हो तो ऐसा नहीं है कि वह अपनी बुद्धि के माध्यम से वह सब छीन सकता है जो अंततः

घटित होने वाला है। दूसरे शब्दों में, सूर्य के क्षैतिज परिप्रेक्ष्य से एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कोई पुनरुत्थान भाषा नहीं दिखती है।

कोहेलेट का मानना है कि बुद्धिमान व्यक्ति, राजा, धनवान, अपने समय के अरबपति, सभी धूल से धूल तक जानवरों की तरह एक ही स्थान पर जा रहे हैं। और इसलिए, इससे हमारे बुद्धिमान व्यक्ति कोहेलेट के गुस्से में कोई कमी नहीं आती है क्योंकि उन्हें एहसास होता है कि ज्ञान के प्रयोग के माध्यम से, वह मृत्यु की अनिवार्यता को हल करने में सक्षम नहीं हैं। हो सकता है कि वह किसी की मृत्यु का समय टालने में भी सक्षम न हो।

मृत्यु एक ऐसी चीज़ है जो सभी व्यक्तियों के साथ घटित होती है, चाहे किसी की क्षमता कुछ भी हो या जीवन में उसका स्थान कुछ भी हो। और इसलिए, जीवन की स्थिति और उपलब्धियों का घटित होने वाली अपरिहार्य मृत्यु पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। सभोपदेशक, अध्याय 2 और श्लोक 14 में इस प्रकार की सोच को प्रतिबिंबित करने वाले कुछ छंदों में, बुद्धिमान व्यक्ति के सिर में आँखें होती हैं जबकि मूर्ख अंधेरे में चलता है।

लेकिन मुझे एहसास हुआ कि उन दोनों का भाग्य एक जैसा ही है। तब मैंने मन में सोचा कि इस मूर्ख का भाग्य मुझ पर भी पड़ेगा। तो फिर बुद्धिमान होने से मुझे क्या हासिल होगा? ऐसा लगता है जैसे कोहेलेट को एहसास है कि मृत्यु की अपरिहार्यता के साथ, ऐसी कोई अंतिम उपलब्धि नहीं है जिसे ज्ञान मेज पर ला सके।

मैंने दिल में कहा ये भी भारी है। मूर्ख जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को लंबे समय तक याद नहीं रखा जाएगा, कोई स्थायी विरासत नहीं होगी। आने वाले दिनों में दोनों को भुला दिया जाएगा।

मूर्ख की तरह बुद्धिमान व्यक्ति को भी मरना होगा। समस्त मानवजाति कब्र की ओर एक ही पथ पर जा रही है। अध्याय 3 और श्लोक 19 से 22 में, कोहेलेट लगभग यही दर्शाता है।

उनका कहना है कि मनुष्य का भाग्य जानवरों जैसा है। वही भाग्य उन दोनों का इंतजार कर रहा है। अब इसका मतलब यह नहीं है कि कोहेलेट की सोच और उनके धर्मशास्त्र में, उन्हें यह सोचकर गुमराह किया गया है कि कोई मरणोपरांत अस्तित्व या चेतना नहीं है।

फिर से, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के धार्मिक संदर्भ के संदर्भ में सोचें। वह चीज़ों को सूर्य के नीचे के परिप्रेक्ष्य से देख रहा है। ऐसा भगवान कहते हैं, वह आवश्यक रूप से रहस्योद्घाटन के अर्थ में घोषणा नहीं कर रहा है।

इसके अलावा, भगवान के रहस्योद्घाटन के इतिहास में कोहेलेट के समय में, हम धर्मग्रंथों के माध्यम से मानव जाति के लिए सत्य के पूर्ण रहस्योद्घाटन से निपट नहीं रहे हैं। और इसलिए ज़रूरी नहीं है कि कोहेलेट को हर उस चीज़ की जानकारी हो जिसकी जानकारी हमें नए नियम को पढ़ते समय हो सकती है। असल में, मैं वास्तव में आपको सुझाव दूंगा, और हम बाद में इस पर विचार करेंगे, जहां तक पश्चात जीवन में मृत्यु के धर्मशास्त्र का संबंध है, कोहेलेट लिफाफे को आगे बढ़ाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मृत्यु के बाद किसी प्रकार के न्याय की अपेक्षा के अधिक संकेत हैं, जितना मैं पुराने नियम में सोच सकता हूँ। हालाँकि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक यह सुझाव देने में आगे नहीं बढ़ती है कि पुनरुत्थान अस्तित्व या एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी या स्वर्ग बनाम नरक का अस्तित्व या ऐसा कुछ भी होगा, यह दिलचस्प है कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक ऐसा प्रतीत होती है निर्णय और गणना के समय के रूप में वर्तमान अस्तित्व से आगे बढ़ना। और इसलिए यह ध्यान देने योग्य बात है।

किसी भी स्थिति में, अध्याय 3 के पाठ पर वापस जाएँ, मनुष्य का भाग्य जानवरों के समान है, दूसरे शब्दों में, धूल से धूल तक। उस अर्थ में, वे वही हैं। वही भाग्य उन दोनों का इंतजार कर रहा है।

जैसे एक मरता है, वैसे ही दूसरा भी मरता है। तो यहां तक कि एक जानवर जैसा मूर्ख व्यक्ति भी जो ज्ञान को जीवन में लागू नहीं कर सकता, हम सभी एक ही स्थान पर जा रहे हैं, यही वह मुद्दा है जो वह बना रहा है। सबकी साँसें एक जैसी हैं।

उस अर्थ में मनुष्य को जानवरों से कोई लाभ नहीं है। सब कुछ अस्त-व्यस्त है। सभी एक ही स्थान पर जाते हैं, सभी धूल से आते हैं, और सभी धूल में ही लौट जाते हैं।

अध्याय 5 के श्लोक 10 में, कोहेलेट कहते हैं, जो कोई भी पैसे से प्यार करता है उसके पास कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं होता है। जो कोई धन से प्रेम करता है वह अपनी आय से कभी संतुष्ट नहीं होता। यह कितना सच है? यह भी हेवेल है।

ऐसी दुनिया में जहां अंततः सभी चीजें क्षणभंगुर हैं और आप अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकते, लालच और किसी तरह का ढेर सारा खजाना हासिल करने की ज्यादातियां, इसे हेवेल माना जाता है। जैसे-जैसे वस्तुएँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उनका उपभोग करने वाले भी बढ़ते हैं। यह कितना सच है? और उनसे स्वामी को क्या लाभ, सिवाय इसके कि वह उन पर अपनी दृष्टि बनाए रखे? कोहेलेट केवल देखने के लिए चीजों को एकत्र करने की बेतुकी बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

यह मुझे अपने एक रिश्तेदार के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। बुढ़ापे में वह अपने बैंक स्टेटमेंट देखा करते थे। उसके लिए, यह कुछ हद तक सुरक्षा की भावना थी।

लेकिन जैसा कि उनके बच्चे उनसे कहते थे, तुम्हें पता है, पॉप, तुम हमेशा के लिए जीवित नहीं रहोगे। आपको उन संसाधनों में से कुछ खर्च करना चाहिए। और वह हर महीने अपने बैंक विवरण देखने में आनंदित होता था जब वे आते थे।

और वह ये सब चीजें किसलिए इकट्ठा कर रहा था? मुफ्त में। वह अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सका। मजदूर चाहे थोड़ा खाए या अधिक, उसकी नींद मीठी होती है, परन्तु धनवान की बहुतायत उसे सोने नहीं देती।

मैंने एक गंभीर बुराई देखी है, इसलिए यह सूर्य के नीचे एक नकारात्मक निर्णय है, धन अपने मालिक को नुकसान पहुंचाने के लिए जमा किया गया है, या धन किसी दुर्भाग्य के कारण खो गया है। मुझे लगता है कि कोहेलेट कहेंगे कि ये चीजें बेतुकी हैं। ताकि जब उसका बेटा हो तो उसके लिए कुछ न बचे।

इसलिए भले ही वह एक स्थायी विरासत का विस्तार करने में सक्षम न हो, लेकिन वह विरासत भी नहीं दे सकता। नग्न मनुष्य अपनी माँ के गर्भ से आता है, हमें अय्यूब के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, और जैसे ही वह आता है, वैसे ही वह चला जाता है। वह अपने श्रम से कुछ भी नहीं लेता जिसे वह अपने हाथ में ले सके।

अनिवार्य रूप से, कोहेलेट कह रहे हैं, एक बुद्धिमान व्यक्ति, एक धनी व्यक्ति, जो महान खजाने को इकट्ठा करता है और जमा करता है, जो महान चीजें हासिल करता है, अंततः उनमें से कुछ भी अपने साथ कब्र में नहीं ले जा सकता है। अध्याय 9 और श्लोक 2 में, कोहेलेट इस सोच को जारी रखते हैं, सभी की नियति समान है। धर्म और दुष्ट, अच्छे और बुरे, शुद्ध और अशुद्ध, वे जो बलिदान चढ़ाते हैं और जो नहीं करते।

जैसा अच्छे आदमी के साथ होता है, वैसे ही पापी के साथ भी। जैसा शपथ लेने वालों के साथ होता है, वैसे ही उनके साथ भी होता है जो शपथ लेने से डरते हैं। यह सूर्य के नीचे होने वाली हर चीज़ की बुराई है।

फिर, इन टिप्पणियों पर बहुत गुस्सा है। एक ही नियति सभी पर हावी हो जाती है। यह मृत्यु है, सामान्य कब्र।

इसके अलावा, मनुष्यों के हृदय बुराई से भरे हुए हैं, और जब तक वे जीवित रहते हैं तब तक उनके हृदयों में पागलपन बना रहता है। वे प्रयास करते हैं, वे कुछ ऐसा हासिल करने के लिए उत्सुक रहते हैं जिसे अंततः वे कब्र में अपने साथ नहीं ले जा सकते हैं, और उसके बाद, वे मृतकों में शामिल हो जाते हैं। जो कोई जीवितों में से है उसे आशा है।

कोहेलेट के पास निश्चित रूप से वर्तमान संभावनाओं का धर्मशास्त्र और स्वयं को वर्तमान में लागू करने का ज्ञान है। हम अभी भी जीवित हैं और हमें आशा है। यहाँ तक कि एक जीवित कुत्ता भी मरे हुए शेर से बेहतर है।

फिर, कोहेलेट यहां उन पुरस्कारों पर टिप्पणी नहीं कर रहे हैं जिनकी कोई 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 और श्लोक 12 से न्याय के बीज की किरण में उम्मीद कर सकता है। फिर, यह उनकी सोच के दायरे में नहीं है। वह सूर्य के नीचे के दृष्टिकोण से सोच रहा है, न कि पीछे हटने वाला या किसी तरह से ईश्वर-विरोधी सोचने का तरीका।

यह बस एक सीमित परिप्रेक्ष्य है जिसे बुद्धिमान व्यक्ति इस दुनिया में अपनी टिप्पणियों पर लागू करता है। क्योंकि जीवित तो जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ नहीं जानते। उन्हें भविष्य में कोई प्रतिफल नहीं मिलता, यहां तक कि उनकी स्मृति भी भुला दी जाती है।

फिर, चीजों को बहुत स्पष्ट करने के लिए, मुझे नहीं लगता कि यहां एक्लेसिएस्टेस या कोहेलेट, हमारे बुद्धिमान व्यक्ति, यहां मृत्यु के बाद किसी प्रकार के विनाशवाद का सुझाव दे रहे हैं। मैं जानता हूँ कि उदाहरण के लिए, यहोवा के साक्षी कई बार एक्लेसिएस्टेस अध्याय 3 और यहां एक्लेसिएस्टेस अध्याय 9 और श्लोक 5 के पाठ को प्रमाणित करेंगे, जिससे पता चलता है कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक विनाशवाद की शिक्षा दे रही है। मुझे याद है कि एक बार मैं वॉचटावर बाइबिल एंड ट्रेक्ट सोसाइटी के एक प्रतिनिधि के साथ यहोवा के साक्षियों के साथ बातचीत कर रहा था।

मैं विद्यार्थियों के एक समूह को एक विशेष चीज़ के लिए लाया था जिसे किंगडम हॉल में स्थापित किया जा रहा था ताकि वे देख सकें कि यहोवा के साक्षी इस विशेष क्षेत्र में क्या करते हैं। मुझे ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क के वॉचटावर के एक प्रतिनिधि के साथ बातचीत करने का अवसर मिला। यदि आप चाहें तो वह वॉचटावर बाइबिल एंड ट्रेक्ट सोसाइटी के प्रमुख नेताओं में से एक थे।

मुझे याद है कि हम एक्लेसिएस्टेस और मृत्यु के संबंध में इनमें से कुछ बयानों के बारे में बातचीत कर रहे थे। जब मैंने इस सज्जन से पूछा कि बाकी एक्लेसिएस्टेस को क्या सिखाना है और यहां उनके तर्क की पंक्ति में कोहेलेट के परिप्रेक्ष्य और उनके सीमित परिप्रेक्ष्य के बारे में, फिर से एक पीछे हटने वाला परिप्रेक्ष्य नहीं, तो इस सज्जन को वास्तव में कुछ भी नहीं पता था कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक क्या कह रही थी या क्या यह शिक्षण था या वह परिप्रेक्ष्य जिसके माध्यम से कोहेलेट इन चीजों को देख रहा था, वह लेंस जिसके माध्यम से वह इन चीजों को देख रहा था, या उसकी यात्रा, हेबेल दुनिया में यित्रीन को खोजने की उसकी खोज। वह इन चीजों को बस इस बात के प्रमाण ग्रंथों के रूप में देख रहा था कि जीवन के बाद किसी भी प्रकार का सचेतन अस्तित्व नहीं होगा।

फिर, मुझे नहीं लगता कि एक्लेसिएस्टेस यहाँ यही कह रहा है। वह बस इतना ही कह रहा है, जैसे मैं सूर्य के नीचे चीजों का निरीक्षण करता हूँ, मैं देखता हूँ कि जीवित रहना अच्छा है, कब्र में रहना अच्छा नहीं है, और ज्ञान आपके साथ कुछ भी नहीं ले जा सकता है। सच तो यह है कि ज्ञान मृत्यु की अनिवार्यता को भी टाल नहीं सकता।

जैसे कुत्ता मरने वाला है, वैसे ही आप भी मरने वाले हैं। यहां कोहेलेट की विचारधारा के अलावा और कुछ नहीं है। अब, इस विचार से परे कि सभी लोग किसी की क्षमता की परवाह किए बिना, जीवन में किसी की स्थिति की परवाह किए बिना मरते हैं, दूसरा विचार जो हम मृत्यु की अनिवार्यता पर इन विचारों में परिलक्षित पाते हैं वह यह है कि किसी की मृत्यु का समय अंततः भगवान द्वारा निर्धारित किया जाता है।

फिर, बुद्धिमान व्यक्ति कोई योजना नहीं बना सकता है और वास्तव में उस योजना को सफल नहीं कर सकता है, किसी की अपनी मृत्यु का समय निर्धारित कर सकता है, जाहिर तौर पर अधिक लाभदायक और लाभकारी अवधि में। सभोपदेशक अध्याय 3 और पद 2 में जो छंद बहुत कुछ सुझाव देते प्रतीत होते हैं, उनके सर्वेक्षण पर एक नज़र डालने पर, यदि समय पर कविता में कोई बिंदु है जहाँ ऐसा लगता है कि भगवान का नियतिवाद दृष्टि में है, तो यह संभवतः द्विआधारी युग में होगा जन्म लेने के समय और मरने के समय के बीच। आप अध्याय 7 और श्लोक 14 से

18 तक भी पाते हैं कि मनुष्य का अपनी मृत्यु के समय को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होने का विचार सामने और केंद्र में है।

जब समय अच्छा हो तो खुश रहो, लेकिन जब समय बुरा हो तो विचार करो। ईश्वर ने एक को भी बनाया है और दूसरे को भी, इसलिए मनुष्य अपने भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं खोज सकता। और फिर बाद में, मूर्ख की तरह व्यवहार न करने, अत्यधिक दुष्ट न बनने, भाग्य को लुभाने की सलाह।

दूसरे शब्दों में, अंततः किसी बिंदु पर ईश्वर आपका न्याय करेगा। समय से पहले क्यों मरें? जो पाप तुम करते हो, उसके लिए परमेश्वर तुम्हें काट सकता है। आपको अध्याय 8, श्लोक 7 में मनुष्य की अपनी मृत्यु के समय को प्रभावी ढंग से निर्धारित करने में असमर्थता के बारे में एक बहुत ही स्पष्ट कथन मिला है।

श्लोक 7 में कहा गया है, चूँकि कोई भी मनुष्य भविष्य नहीं जानता, तो उसे कौन बता सकता है कि क्या होने वाला है? किसी भी मनुष्य के पास हवा पर काबू पाने की शक्ति नहीं है, इसलिए किसी के पास अपनी मृत्यु के दिन पर भी शक्ति नहीं है। मनुष्य की अपनी मृत्यु का समय निर्धारित करने में मनुष्य की अक्षमता और यहां तक कि बुद्धि की असमर्थता के बारे में एक बहुत ही स्पष्ट बयान। अध्याय 8, श्लोक 12 और 13 में हम इसी प्रकार की बात पाते हैं।

यद्यपि दुष्ट मनुष्य सैकड़ों बार पाप करता है, फिर भी दीर्घ जीवन जीता है। मैं जानता हूँ कि यह उस ईश्वर-भयभीत व्यक्ति के लिए बेहतर होगा जो ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखता है। तौभी दुष्ट लोग परमेश्वर का भय नहीं मानते, इस कारण उनका भला नहीं होगा, और उनके दिन फिर छाया के समान लम्बे न होंगे।

वहाँ कुछ विश्वास व्यक्त किया जा रहा है, लेकिन अंततः निर्णय देने का नियंत्रण ईश्वर के पास है। और फिर अध्याय 9, और श्लोक 11 और 12 में, मैंने सूर्य के नीचे कुछ और देखा है। न दौड़ तेज़ को मिलती है, न लड़ाई बलवान को मिलती है, न बुद्धिमान को भोजन मिलता है, न मेधावी को धन मिलता है, न विद्वान को अनुग्रह मिलता है, बल्कि समय और संयोग उन सभी को मिलता है।

फिर, अंततः यह ईश्वर की संप्रभुता ही है जो मृत्यु का समय निर्धारित करती है। इसके अलावा, कोई भी व्यक्ति नहीं जानता कि उसका समय कब आएगा, यानी उसकी मृत्यु का दिन कब आएगा। जैसे मछलियाँ क्रूर जाल में फँस जाती हैं और जैसे पक्षी जाल में फँस जाते हैं, वैसे ही मनुष्य बुरे समय में फँस जाते हैं जो उन पर अप्रत्याशित रूप से पड़ता है।

आप एक सुबह जाग रहे होंगे और अपनी दिनचर्या की योजना बना रहे होंगे। आपके पास किसी विशेष दिन या अपने जीवन की किसी विशेष अवधि के लिए भी बहुत अच्छी योजनाएँ हो सकती हैं, लेकिन उन चीज़ों के परिणाम की निश्चित रूप से गारंटी नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितनी बुद्धिमानी से योजना बना सकते हैं, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप आकस्मिकताओं के लिए कितने तरीकों से योजना बना सकते हैं, भगवान अंततः आपके ऊपर निर्भर है।

वही आपकी मृत्यु का दिन निर्धारित करने में सक्षम है। और इसलिए, हम इन प्रतिबिंबों में मनुष्य की अक्षमता और ईश्वर की संप्रभुता को निश्चित रूप से पाते हैं। हम यह भी पाते हैं कि एक्लेसिएस्टेस का सुझाव है कि मृत्यु किसी के जीवन की गुणवत्ता के विरुद्ध एक बाधा हो सकती है, या जिसके द्वारा जीवन की गुणवत्ता को मापा जा सकता है।

फिर से, जोड़ना कुछ हद तक है, मुझे नहीं लगता कि एक्लेसिएस्टेस आवश्यक रूप से एक निराशाजनक, निंदक या नकारात्मक पुस्तक है, लेकिन आप पाते हैं कि इनमें से कुछ प्रतिबिंब एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में नकारात्मकता का माहौल जोड़ते हैं। अध्याय 4, श्लोक 1-3 में, सूर्य के नीचे जीवन को देखते हुए कोहेलेट जो प्रतिबिंब बनाता है, उसमें से एक यह है कि, मैंने फिर से देखा और मैंने सूर्य के नीचे होने वाले उत्पीड़न को देखा। मैं ने दीन लोगों के आंसू देखे, और उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं।

सत्ता उनके उत्पीड़कों के पक्ष में थी, और उनके पास कोई सांत्वना देने वाला नहीं था। इस भारी दुनिया में, कभी-कभी हम बड़े अन्याय होते हुए देखते हैं। और मैं उत्तर कोरिया जैसी जगहों या आज दुनिया की उन जगहों के बारे में सोचता हूँ जहां उत्पीड़न और भ्रष्टाचार आम बात है।

और ऐसा लगता है जैसे एक के बाद दूसरी पीढ़ी, एक के बाद दूसरी पीढ़ी इसका अनुभव कर रही है। वे एक भ्रष्ट समाज में पैदा हुए हैं, और वे एक भ्रष्ट समाज में ही मर जाते हैं, और वे बहुत कष्ट सहते हैं। और ऐसा लगता है जैसे भगवान मौजूद ही नहीं है।

ऐसा लगता है जैसे कभी-कभी भगवान इसके बारे में कुछ नहीं कर रहे हैं। मैं कुछ भविष्यवक्ताओं के बारे में सोचता हूँ, भविष्यवक्ता हबक्कूक, जिन्होंने कहा, अन्याय, अन्याय और हिंसा, क्या आप इसे नहीं देखते हैं, भगवान? और अंततः, परमेश्वर ने हबक्कूक को उत्तर दिया और कहा, मैं तुम्हारे दिनों में काम करूँगा और काम करूँगा जिस पर तुम विश्वास नहीं करोगे, यद्यपि तुम्हें बताया गया था कि मैं तुम्हारी बेतहाशा कल्पना से परे काम करने जा रहा हूँ। मेरे पास एक योजना है।

लेकिन जरूरी नहीं कि कोहेलेट ने ईश्वर के साथ उस तरह की बातचीत की हो जैसा हम भविष्यवक्ता हबक्कूक में देखते हैं। कोहेलेट बस यह देखते हैं कि ऐसा लगता है कि इस स्वर्गीय दुनिया में अन्याय हो रहा है, और बड़ी पीड़ा हो रही है, और भगवान आराम नहीं दे रहे हैं। और यह निश्चित रूप से कोहेलेट को कुछ झुंझलाहट का कारण बनता है।

और मैं घोषणा करता हूँ कि मरे हुए, जो पहले ही मर चुके हैं, उन जीवितों की तुलना में अधिक खुश हैं, जो अभी भी जीवित हैं। यह मुझे अध्याय 3 में अय्यूब के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, जहां अय्यूब अपने जन्म के दिन पर शोक मनाता है। उनका कहना है कि इस तरह की पीड़ा झेलने से बेहतर होता कि मैं एक मृत बच्चा होता, जिस तरह से मैं पीड़ा झेल रहा हूँ।

पद 3 में, कोहेलेट भी यही प्रतिध्वनित करता प्रतीत होता है, परन्तु दोनों से बेहतर वह है जो अभी तक नहीं हुआ है, जिसने वह बुराई नहीं देखी है जो सूर्य के नीचे होती है। दूसरे शब्दों में, कोहेलेट चीजों को इस तरह से तैयार कर रहे हैं कि वह कह रहे हैं कि किसी प्रकार के आनंद के बिना

जीना, किसी प्रकार की संतुष्टि के बिना जीना, जीने का कोई तरीका नहीं है। और इसलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में, वह ऐसे तरीकों की खोज और खोज कर रहा है जिससे कोई व्यक्ति पतित दुनिया में जीए गए इस जीवन से खुशी प्राप्त कर सके।

लेकिन निश्चित रूप से बुद्धिमान व्यक्ति को यह देखकर काफी दुख होता है कि ऐसे जीवन भी हैं जहां कोई खुशी नहीं है, बल्कि केवल पीड़ा है। और इसलिए, एक विषम परिस्थिति जिसके आधार पर जीवन की गुणवत्ता मापी जाती है। इसे जोड़ते हुए, हम देखते हैं कि मृत्यु की अनिवार्यता काफी प्रेरणादायक है, यदि आप चाहें तो यह जीवन के आनंद की ओर एक प्रोत्साहन है।

अब हम अगले व्याख्यान में एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में एक प्रमुख रूपांकन के रूप में जीवन के आनंद की खोज करेंगे। पूरी किताब में जीवन का आनंद लेने की बात सात बार दोहराई गई है। यह पुस्तक के प्रारंभ में अध्याय 2 में शुरू होता है और अध्याय 11 में पुस्तक के अंत तक विस्तारित होता है।

यह निश्चित रूप से सभोपदेशक की बातचीत में व्याप्त प्रतीत होता है। और मृत्यु की अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए, कोई यह पाता है कि मृत्यु को वर्तमान अनुभव की ओर प्रेरित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक बुद्धिमान व्यक्ति लौकिक बैल को सींगों से पकड़ लेगा और वह जीवन को पूरी तरह से जीएगा।

वह ईश्वर द्वारा दिए गए उपहारों में संतुष्टि पाने की कोशिश करेगा, जिस तरह के अवसर ईश्वर यहां तक कि गिरे हुए आदमी को भी प्रदान करता है, यहां तक कि भारी रूप से गिरी हुई दुनिया में गिरी हुई मानव जाति को भी देता है। और इसलिए, किसी भी मामले में हमें जीवन के आनंद के साथ-साथ मृत्यु की अनिवार्यता के विभिन्न संदर्भ मिलते हैं। अध्याय 2 और श्लोक 24 में हमने पढ़ा, इनमें से कई पाठ हम पहले भी पढ़ चुके हैं, लेकिन फिर से केवल मुद्दे पर प्रकाश डालने के लिए, मैं एक आदमी के लिए खाने-पीने और अपने काम में संतुष्टि पाने से बेहतर कुछ नहीं देख सकता।

यह भी मैं देखता हूँ, कि यह परमेश्वर के हाथ से है, क्योंकि उसके बिना कौन खा सकता है, या भोग पा सकता है? जो मनुष्य उसे प्रसन्न करता है, उसे भगवान बुद्धि, ज्ञान और खुशी देते हैं, लेकिन पापी को वह धन इकट्ठा करने और संचय करने का काम छोड़ देता है ताकि उसे भगवान को प्रसन्न करने वाले को सौंप दे, फिर से इस बिंदु पर संकेत करता है कि उसके बाद वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे वह अपने साथ ले जा सके। और इसलिए, यह भी हेवेल है, हवा का पीछा करना। जीवन का आनंद लेने के दौरान, जिसकी हम जांच करेंगे और अगले व्याख्यान में विचार करेंगे, हम पाते हैं कि मृत्यु की अनिवार्यता को स्पष्ट रूप से न कहा जाए तो कम से कम संकेत दिया जाना चाहिए।

वास्तव में, संभवतः वर्तमान गतिविधि और अनुभव के लिए एक संकेत और एक प्रेरक के रूप में मृत्यु की अनिवार्यता का सबसे अच्छा उदाहरण अध्याय 9 और छंद 7-10 में पाया जाता है। जाओ, अपना भोजन आनन्द से खाओ, और अपना दाखमधु आनन्द से पीओ, क्योंकि अब जो

कुछ तुम करते हो, परमेश्वर उस पर प्रसन्न होता है। सदैव श्वेत वस्त्र धारण करो और सदैव अपने सिर पर तेल लगाओ।

दूसरे शब्दों में, जीवन के वर्तमान अनुभव से आनंद लेने के अवसरों की तलाश करें। अपनी पत्नी के साथ, जिससे तुम प्रेम करते हो, जीवन का आनन्द लो, इस भारी जीवन के सारे दिन जो परमेश्वर ने तुम्हें सूर्य के नीचे दिए हैं, अपने सारे अमीर दिन, क्योंकि यही तुम्हारा भाग है। मेरा सुझाव है कि इस शब्द, हेलेक, का अनुवाद आवंटन के रूप में किया जाना चाहिए।

मैं इसे बहुत सकारात्मक तरीके से लेता हूं और हम अगले व्याख्यान में इसका पता लगाएंगे। क्योंकि यह जीवन में और आपके कठिन परिश्रम में आपका आवंटन है, जरूरी नहीं कि यह एक नकारात्मक चीज हो, लेकिन यह आपका अमल है, सूर्य के नीचे हेवेल दुनिया में काम करें। आपका हाथ जो भी करने को मिले, उसे अपनी पूरी ताकत से करें।

क्योंकि कब्र में, शीओल, जहां तुम जा रहे हो, और संदेह मत करो कि तुम वहीं जा रहे हो, तुम उस प्रक्षेप पथ में हो, वहां न तो काम है, न योजना, न ज्ञान और न ही बुद्धिमत्ता। और इसलिए वहां हम फिर से पाते हैं कि कोहेलेट बुद्धिमान व्यक्ति को इस उम्मीद के आधार पर गतिविधि करने के लिए प्रेरित करता है कि कल की गारंटी नहीं है, यह उम्मीद कि अंततः हम उस स्थान पर जा रहे हैं जहां इनमें से कोई भी गतिविधि नहीं की जाएगी। और आप उस प्रकार की प्रेरणा अध्याय 11 में फिर से देखते हैं।

हे नवयुवक, जब तक तुम जवान हो, प्रसन्न रहो, पद 9, और जवानी के दिनों में तुम्हारा हृदय तुम्हें आनन्द दे। अपने हृदय के मार्ग का और जो कुछ तेरी आंखें देखती है उसी का पालन कर, परन्तु यह जान कि इन सब बातों के लिये परमेश्वर तुझे दण्ड देगा। हम यहां बाद में ईश्वर के भय पर व्याख्यान में निर्णय के पहलू का पता लगाएंगे, और मैं इस व्याख्यान में भी उस पर थोड़ा और विस्तार से चर्चा करूंगा।

तो फिर, चिंता को अपने हृदय से दूर कर दो और अपने शरीर की परेशानियों को दूर कर दो, क्योंकि यौवन और जोश हेबेल हैं, वे जा रहे हैं। मुसीबत के दिन आने से पहले, अपनी युवावस्था के दिनों में अपने निर्माता को याद करें, और फिर आपके पास उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को चित्रित करने वाला रूपक है। हाल ही में, जब हम इसका वीडियोटेप कर रहे थे, एक बहुत ही प्रमुख व्यक्ति, मुहम्मद अली की मृत्यु हो गई।

और उस दौरान जब मीडिया और टेलीविजन पर उनके जीवन का जश्न मनाया जा रहा था, मैं 1960 और 70 के दशक के हैवीवेट मुक्केबाजी के स्वर्ण युग के उनके कुछ पुराने मुक्केबाजी मैच देख रहा था। और आप युवा, जीवंत मुहम्मद अली को देखते हैं, और यह आश्चर्यजनक है, यह इतनी ताकत और शक्ति वाला व्यक्ति है, जो वास्तव में, आप जानते हैं, निश्चित रूप से खुद को सबसे महान कहता है, लेकिन, आप जानते हैं, मुक्केबाजी की दुनिया में, वह था . मेरा मतलब है, वह युवावस्था और जोश की पराकाष्ठा थे, मेरा मतलब है, उन्होंने वह सब कुछ चित्रित किया जो मानव जाति में एक स्वस्थ, युवा, जीवंत व्यक्ति में हो सकता है।

और फिर, कुछ साल बाद, उनकी उम्र 40 के दशक की शुरुआत में, उन्हें एक भयानक बीमारी, पार्किंसंस रोग का पता चलता है, और फिर आप नीचे की ओर जाने वाली स्थिति देखना शुरू कर देते हैं। 74 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो जाती है, और आप उनके अंतिम वर्षों की तस्वीरें देखते हैं, और वह उनकी एक छाया मात्र हैं, जो उनके पूर्व स्वरूप की छाया मात्र थीं। यह जीवन की भारीपन का दुखद प्रमाण है।

और सच्चाई यह है कि, चाहे आप शारीरिक, मानसिक, यहां तक कि आध्यात्मिक रूप से भी कोई भी हों, हम सभी इस भौतिक क्षेत्र में अभिशाप के तहत हैं, एक ही दिशा में महान की ओर जा रहे हैं। और कोहेलेट फिर से इन बातों पर विचार करता है। अध्याय 12 में, आप उम्र बढ़ने की प्रक्रिया के बारे में बुद्धिमान व्यक्ति पर अंकित कल्पना को देखते हैं, और संकेत यह प्रतीत होता है कि जब तक आप कर सकते हैं तब तक जीवन का आनंद लें, और भगवान के भय में शांति से जीवन जिएं क्योंकि मृत्यु की अनिवार्यता बहुत अधिक है एक बुद्धिमान व्यक्ति की सोच में सबसे आगे।

और इसे जीवन के आनंद की ओर प्रेरित करना चाहिए, और इसे जीवन में संयम की ओर, ईश्वर को याद करने की ओर प्रेरित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हम ईश्वर के भय पर भविष्य के व्याख्यान में, संप्रभु ईश्वर के प्रति श्रद्धा के कई संदर्भ पाएंगे, लेकिन साथ ही, हम पाते हैं कि ईश्वर का भय किसी प्रकार की अपेक्षा से प्रेरित होता है। भविष्य का निर्णय. उदाहरण के लिए, अध्याय 12 में, अनिवार्य है, अपनी युवावस्था के दिनों में अपने निर्माता को याद रखें, यह एक वर्तमान प्रेरणा है, लेकिन यदि आप पुस्तक के बिल्कुल अंत और अध्याय के अंत को देखें, तो आप पाएंगे कि यह भविष्य में किसी प्रकार के निर्णय की अपेक्षा है जो कोहेलेट और एक बुद्धिमान व्यक्ति को जीवन में संयम की ओर प्रेरित करती प्रतीत होती है।

श्लोक 13, अब सब सुन लिया गया है, यहाँ मामले का निष्कर्ष है। ईश्वर से डरो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो, क्योंकि यही मनुष्य का संपूर्ण कर्तव्य है। क्योंकि परमेश्वर हर काम का, हर छिपी हुई बात का, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, न्याय करेगा।

हर छुपी हुई चीज़ के बारे में यह कथन, भले ही छिपा हुआ हो और यहां तक कि किसी भी प्रकार के विवरण के बिना भी, हमारे बुद्धिमान व्यक्ति कोहेलेट के जीवन के बाद के फैसले पर कुछ अपेक्षाओं का सुझाव देता प्रतीत होता है। दूसरे शब्दों में, भले ही वर्तमान काल में चीज़ें आवश्यक रूप से उचित रूप से निष्पादित न हों, ऐसी अपेक्षा है कि ईश्वर भविष्य काल में गणना के अंतिम दिन में चीज़ों को सुधार देगा। परमेश्वर हर कर्म का न्याय कब करेगा, चाहे वह अच्छा हो या बुरा? ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु की अनिवार्यता में, भविष्य में किसी प्रकार के निर्णय की अपेक्षा भी है।

वास्तव में, ऐसा अध्याय 3 और श्लोक 17 में बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है। पिछले व्याख्यान में, मैं समय पर कविता के साथ काम कर रहा था और मेरा सुझाव है कि खंड अध्याय 3 और श्लोक 1 से शुरू होता है और अध्याय 3 के साथ समाप्त होता है। और श्लोक 17. हर चीज़ के लिए एक समय और स्वर्ग के नीचे हर गतिविधि के लिए एक मौसम, श्लोक 1 में, इस कथन के समापन में

पूरक प्रतीत होता है, भगवान धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेंगे, और एक समय आएगा प्रत्येक गतिविधि के लिए और प्रत्येक कार्य के लिए एक समय।

ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर इस दुनिया में सभी चीजों का आयोजन करता है, जहां वह समय निर्धारित करता है, जहां उसने वास्तव में उपयुक्त समय बनाया है, जहां उसने घटनाओं के घटित होने के लिए चक्रीय घटनाएं प्रदान की हैं, जहां मनुष्य चीजों के समय में ज्ञान लागू कर सकता है। और समय की उपयुक्तता को पहचानें। फिर भी, कभी-कभी इस वर्तमान अनुभव में निर्णय के लिए ईश्वर के समय की कमी प्रतीत होती है। और फिर भी, कोहेलेट इस उम्मीद के प्रति कृतसंकल्प प्रतीत होता है कि ईश्वर एक दिन चीजों को सही करेगा, गलतियों को सुधारेगा, और मनुष्य के लिए अपने द्वारा किए गए कार्यों के लिए जवाब देने का समय होगा।

और इसलिए, मृत्यु के बाद, यह अपेक्षा प्रतीत होती है। यह निश्चित रूप से छिपा हुआ है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोहेलेट की मृत्यु के धर्मशास्त्र और मृत्यु की अनिवार्यता के आवरण को आगे बढ़ा रहा है।